INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in June 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

" क्षेत्रीय दशाओं के आधार पर महिला एवं पुरूषों का रहन–सहन भारत के हरियाणा राज्य के सन्दर्भ में"

डॉ. सुरेंद्र कुमार, सहायक आचार्य (भूगोल), श्री महावीर जैन पी. जी. महाविद्यालय, हनुमानगढ़ टाउन, राजस्थान

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना

यह उत्तर भारत का एक राज्य है जिसे पंजाब राज्य से 1 नवम्बर, 1966 को अलग किया गया था। इसकी सीमा उत्तर में पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश से, दक्षिण में राजस्थान से, पूर्व में उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश और यमुना नदी से बंधी है। पश्चिम दिशा भी राजस्थान से सटी हुई है। भारत की राजधानी के तीनों तरफ भी हरियाणा की सीमा लगी है। जिसकी वजह से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का एक बड़ा हिस्सा हरियाणा में शामिल है। हरियाणा प्रदेश की राजधानी चण्डीगढ़ है जो केन्द्र शासित प्रदेश होने के साथ–साथ पंजाब की राजधानी चण्डीगढ़ है जो केन्द्र शासित प्रदेश होने के साथ–साथ पंजाब की राजधानी है। हरियाणा का विस्तार $27^{0}39'$ उत्तरी अक्षांश से $30^{0}55'$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^{0}27'8''$ पूर्वी देशांतर से $77^{0}36'5''$ पूर्वी देशान्तर तक है। हरियाणा राज्य के नामकरण के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है। यह प्रदेश देवताओं द्वारा अस्तित्व में आया इसलिए प्राचीन समय में इस क्षेत्र को ब्रह्मवर्त के नाम से जाना जाता था। कई विद्वानों के अनुसार हरियाणा का अर्थ है 'हरि का स्थान'। लेकिन इन मतों में से कोई भी मत इतिहास की कसौटी पर सत्य साबित हूआ प्रतीत नहीं होता। ऐसा मत प्रकट किया जाता है कि हरियाणा का नाम इसके भौगोलिक वातावरण के अनुसारहुआ है। प्राचीन काल में यह प्रदेश एक हरे–भरे भौगोलिक क्षेत्र का हिस्सा था।

प्रशासनिक इकाईयाँ

हरियाणा का जन्म 1 नवम्बर, 1966 को हुआ। जब द्विभाषीय पंजाब राज्य के हिन्दी भाषी क्षेत्र से अलग करके एक अलग राज्य का निर्माण किया गया। प्रारम्भ में 6 जिले हिसार, रोहतक, करनाल, अम्बाला, गुढ़गांव और महेन्द्रगढ़ थे। संगरूर क्षेत्र के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा में सम्मिलित करके नये जिले जीन्द का निर्माण किया गया। इसके पश्चात् हरियाणा में 12 और जिलों का निर्माण किया गया। 22 दिसम्बर, 1972 को भिवानी तथा सोनीपत जिलों का निर्माण किया गया। ठीक दो महिने बाद 23 जनवरी, 1973 को कुरूक्षेत्र जिला बनाया गया। 26 अगस्त, 1975 को हिसार जिले के उत्तरी–पश्चिमी भाग अलग करके सिरसा जिले का निर्माण किया गया। 2 अगस्त, 1979 में गुड़गांव जिले के दो भाग फरीदाबाद जिला बनाया गया। 1 नवम्बर, 1989 को कैथल, रेवाड़ी, यमुनानगर तथा पानीपत हरियाणा दिवस में नये उपलक्ष्य पर जिले बनाये गये। 15 अगस्त, 1995 में अम्बाला से पंचकूला जिले का निर्माण किया गया। 15 जुलाई, 1997 को रोहतक जिले से झज्जर तथा हिसार क्षेत्र से फतेहाबाद जिले का जन्म हुआ। इस प्रकार अब हरियाणा में 19 जिले है। हरियाणा का कुल क्षेत्रफल 44212 वर्ग किमी. है।

सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य

(i) वैदिक काल

सिन्धु घाटी जितनी पुरानी कई सभ्यताओं के अवशेष सरस्वती नदी के किनारे पाये गये है। जिनमें नौरंगाबाद और मिट्टाथल भिवानी में, कुणाल फतेहबाद में, अग्रोहा राखी गढ़ी हिसार में, रूखी रोहतक में और बनवाली सिरसा जिलों में प्रमुख है। प्राचीन वैदिक सभ्यता भी सरस्वती नदी के आस–पास, फली–फूली है। ऋग्वेद (हिन्दू) के मंत्रो की रचना भी यहीं हुई है। भारत के महाकल्प, महाभारत में हरियाणा का उल्लेख बहुधान्यक और बहुधन के रूप में किया गया है। महाभारत में वर्णित हरियाणा के कुछ स्थान आज के आधुनिक शहरों जैसे प्रियुदक (पिहोवा), पानप्रस्थ (पानीपत) और सोनप्रस्थ (सोनीपत) में विकसित हो गए हैं। गुड़गाँव का अर्थ गुरू के ग्राम यानि गुरू द्रोणाचार्य के गाँव से है। कौरवों और

पाण्डवों का महाभारत का युद्ध कुरूक्षेत्र के निकट हुआ था।

(ii) सांस्कृतिक परिदृश्य

हरियाणा के आर्थिक विकास के मुकाबले में सामाजिक विकास बहुत पिछड़ा रहा है। हरियाणा के सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र पर शुरू से इन्हीं सम्पन्न तबकों का दबदबा रहा है। यहाँ के काफी लोग फौज में गए और आज भी हैं। हरियाणा की संस्कृति महज रोहतक, जींद, सोनीपत जिलों की संस्कृति नहीं है। हरियाणवी डायलैक्स एक भाषा का रूप ले सकते है। महिला विरोधी, दलित विरोधी तथा प्रगति विरोधी तत्वों को यदि हरियाणवी संस्कृति से बाहर कर दिया जाये। अगर देखा जाए तो व्यक्तिगत स्तर पर महिलाओं और पुरूषों ने बहुत सारी सफलताएं हासिल की हैं। हरियाणा में पहले भी गाँव की संस्कृति, गाँव की परम्परा, गाँव की इज्जत व शान के नाम पर बहुत छल–प्रपंच रह गए हैं और वंचितो और दलितों व महिलाओं के साथ न्याय व महिलाओं के साथ न्याय की बजाय बहुत अन्यायपूर्ण व्यवहार किये जाते रहे है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

स्त्रियों के प्रति सामाजिक मूल्यों का अनदेखा

महिलाओं के प्रति असमानता व अन्याय पर आधारित हमारे रीति–रिवाज आज भी मौजूद हैं। हरियाणा में कुप्रथाओं के चलते महिला–पुरूष अनुपात चिन्ताजनक स्तर तक चला गया है। हरियाणा में पिछले कुछ सालों में यौन अपराध दूसरे राज्यों से महिलाओं को खरीद कर लाना और उनका यौन शोषण तथा बाल विवाह का प्रचलन अधिक रहा हैं।

महिलाओं के अधिकारों की अनदेखी

हरियाणा में महिलाओं के अधिकारों की अनदेखी की जाती है। समुदाय, परिवार या जाति की इज्जत बचाने के नाम पर महिलाओं को पीटा जाता है और उनकी हत्या कर दी जाती है। उनके साथ एक ऐसा व्यवहार किया जाता है जैसे उनकी कोई इज्जत नहीं है।

जनसंख्या

हरियाणा देश के उत्तरी भाग में स्थित एक राज्य है। 2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा की जनसंख्या 2.53 करोड़ है। जो भारत की कुल जनसंख्या का 2.09 प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा की कुल आबादी 25,353,081 है जिसमें पुरूष और महिला क्रमशः 13,505,130 और 11,847,951 है। 2001 में कुल आबादी 21,144,564 थी जिसमें पुरूष 11,363,953 थे जबकि महिलाएं 9,780,611 थी।

(i) जनसंख्या वृद्धि दर

इस दशक में कुल जनसंख्या वृद्धि 19.90 प्रतिशत अंकित की गई है। जबकि पिछले दशक में यह 28.06 प्रतिशत थी। हरियाणा की जनसंख्या 2011 में भारत की जनसंख्या का 2.09 प्रतिशत है। 2001 में यह आकंड़ा 2.06 प्रतिशत था।

(ii) साक्षरता दर, 2011

2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में साक्षरता दर 76.64 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष 85.38 प्रतिशत और महिला 66.77 प्रतिशत है।

(iii) जनसंख्या घनत्व, 2011

हरियाणा का कुल क्षेत्रफल 44212 वर्ग किमी. है जिसका घनत्व 573 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है जो 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. के राष्ट्रीय औसत की तुलना में अधिक है। 2001 में हरियाणा में घनत्व 478 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. था जबकि 2001 में देश की औसत 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. था।

प्रस्तावित शोध का महत्व

2011 की जनगणना के अनुसार 1000 पुरूषों पर 877 स्त्रियां है जो राष्ट्रीय औसत से कम

है। 2001 में महिला लिंगानुपात 1000 पर 861 था। हरियाणा में बाल लिंगानुपात 2011 की जनगणना के अनुसार 1000 पुरूष बच्चों पर 830 है जो 2001 में बाल लिंगानुपात 1000 पुरूष बच्चों पर 861 महिला बच्ची थी। 2011 में 2001 की तुलना से 134 कम हैं।

लिंगानुपात जनसंख्या में संरचना व विशेषता का महत्वपूर्ण अंग है। लिंगानुपात भारत में प्रति हजार पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या दर्शाता है। भारत में लिंगानुपात हमेशा से ही पुरूषों के पक्ष में रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रति 1000 पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या 1000 से कम होती है। पूर्व के अध्यायों में विश्लेषण के आधार पर यह पता चलता है कि 2011 में भारत में लिंगानुपात 940 था जो 2001 में 933 स्त्रियां प्रति हजार पुरूष था। अतः 1991 में 929 स्त्रियां प्रति हजार पुरूषों पर था। सन् 1991 से 2011 के मध्य लिंगानुपात में वृद्धि हुई है। इसके पूर्व में लिंगानुपात के समबन्ध में ऐसी स्थिति नहीं थी। बींसवी शताब्दी के प्रारम्भ में जब 1901 में लिंगानुपात 972 था, भारत में लिंगानुपात में लगातार कमी दर्ज की गयी है। लिंगानुपात में यह कमी भारत की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दशाओं के कारण से रही है जिसमें महिलाओं को निम्न स्तर का दर्जा दिया जाता है। तथा भारत में राजनीतिक व आर्थिक क्रियाकलापों को महिलाओं की भागीदारी बहुत कम रहती है। इसके अलावा स्वतन्त्र रूप से कोई फैसला लेने में सक्षम नहीं रहती और हमेशा पुरूषों पर निर्भर रहती है। इसके अलावा भारत में महिलाओं के प्रति अपराध भी काफी संख्या में रहते है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

सभी स्थितियों के चलते समाज में महिलाओं की स्थित निम्न स्तर की रहती है। इससे समाज व परिवार में पुत्र के प्रति मोह अधिक होता है। क्योंकि पुत्र आर्थिक रूप से सहायक होते है और पितृ सत्तात्मक समाज में वंश बढ़ाने का काम करते है। अतः प्रत्येक परिवार में पुत्रों के प्रति अधिक मोह होता है। इसलिए इनके लालन–पालन पर अधिक ध्यान दिया जाता है ओर उन्हें स्वास्थ्य सुविधाएं व अच्छी शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके विपरित महिलाओं के लालन–पालन पर कम ध्यान दिया जाता है एवं उनके स्वास्थ्य और शिक्षा सम्बन्धी जरूरतों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

शारीरिक रूप से पुरूष ज्यादा शक्तिशाली होते हैं किन्तु बीमारियों से लड़ने की क्षमता महिलाओं में अधिक होती है। क्योंकि महिलाओं में स्वास्थ्य को समाज व परिवार में नजरअंदाज किया जाता है। इसलिए महिलाओं में मृत्युदर अधिक होती है। इसीलिए भारत में लिंगानुपात में कमी दिखाई देती है। इसके अलावा भारत के कुछ उत्तर–पश्चिमी राज्यों में जैसे हरियाणा, पंजाब, राजस्थान शामिल है वहाँ पर महिलाओं की स्थिति इतनी निम्न थी कि वहाँ इन राज्यों में स्त्री शिशु के जन्म के तुरन्त पश्चात् विभिन्न तरीकों से इन्हें मार दिया जाता था। इस कारण इन राज्यों में ऐतिहासिक रूप से भी लिंगानुपात कम रहता है। हरित क्रान्ति के पश्चात् पंजाब व हरियाणा राज्य ने आर्थिक दृष्टि से काफी विकास किया है। किन्तु सामाजिक दृष्टि से ज्यादा परिवर्तन इन राज्यों में नहीं हुआ। इसलिए इन राज्यों में खासकर हरियाणा राजय में विकास के नवीन आयामों के साथ–साथ रूढिवादी परम्परायें भी समानांतर रूप से दृष्टिगोचर होती है। जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त के आधार पर विकास और जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आती है। ऐसी स्थिति में जब हरियाणा राज्य में विकास हुआ तो जन्म दर में कमी आने लगी। लेकिन सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में ज्यादा परिवर्तन नहीं आया। अतः पुत्रों की प्रबलता यथावत रही। इस चाह को पूरा करने के लिये और दूसरी तरफ जन्म दरकम या परिवार को सीमित रखने के द्वन्द्व में आधुनिक स्वास्थ्य तकनीक का सहारा लिया गया। इस कारण अब स्त्री शिशु को इन तकनीक की सहायता से जन्म लेने से पूर्व गर्भ में मारा जाने लगा। इस कारण हरियाणा राज्य में लिंगानुपात व शिशु लिंगानुपात सबसे कम दर्ज किया जाने लगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गोसाल, जी.एस.(198) : लिटरेसी इन इण्डिया।
2. सिंह, एस.एन.(1989) : भारत का जनसंख्या भूगोल, बी.आर. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
3. बोस, आशीष (1978) : अर्बनाईजेशन, टाटा मैंक्ग्रा हिल. नई दिल्ली।
4. अग्रवाल, एस.एन.(2006) : इण्डियाज पोपुलेशन प्रोब्लम्स, द्वितीय संस्करण, टाटा मैक्ग्रा हिल, नई दिल्ली।
5. बेउजाऊ, गार्नियर(1966) : जनसंख्या की संरचना, लंदन
6. चांदना, आर.सी.(1987) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।